आज के संदर्भ में रक्षाबंधन

विविध वर्णों, जातियों, भाषाओं, धर्मों व सभ्यताओं रूपी सुमन से सुवासित भारतीय पुष्प वाटिका, देश-देशान्तर के अनेकानेक अन्तर्द्वीप समूहों में अपूर्व विशिष्टता लिए अपनी अद्‌भुत सुषमा से न केवल पर्यटकों को अपितु सुदूर देश-विदेश वासियों को भी अनिर्वचनीय सांस्कृतिक सम्पदा के प्रति लालायित कर लेती है। देवभूमि भारतवर्ष की यह प्रभु-प्रदत्त विरासत ही तो है और यह है भारत माँ की अपनी गौरवपूर्ण गरिमा जो अपने हरित आँचल में नाना प्रकार के सुन्दर-सुखद-मधुर त्योहारों को समाहित किए है।

रक्षाबन्धन के प्रति व्यापक लोकप्रियता

भारत वर्ष के भिन्न-भिन्न त्योहारों में रक्षाबन्धन की अलौकिकता, महानता व दिव्यता अक्षुकोरों में श्रद्धामोती भर करके, हृदय-वीणा के तारों को झंकृत कर देती है। यह त्योहार देश, वर्ण, भाषा की सीमाओं को लाँघ कर विश्वव्यापी बन चुका है। आज तक भी रक्षाबन्धन के महत्त्व को कम नहीं आँका जा रहा है। हर मन इसे मनाने के लिए उत्सुक रहता है।

आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में रक्षाबन्धन

रक्षा का मतलब सम्भाल करने से है लेकिन यदि भाई छोटा है, बहन बड़ी है तो शरीर-रक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उठता। वास्तव में, यह शरीर-रक्षा की नहीं, धर्म-रक्षा की बात है। 'धर्मो रक्षति रक्षित:' की उक्ति प्रमाण हमारी रक्षा धर्म से होगी और वह धर्म है आत्मा का। इसमें आवश्यक नहीं कि एक ही माँ की दोनों सन्तानें हों या एक ही जाति के, एक ही देश के और एक ही भाषा के, नहीं। यह सम्बन्ध व्यापक दृष्टिकोण लिए हुए है। इतिहास साक्षी है कि शिकागो में जब स्वामी विवेकानन्द ने 'प्रिय बहनो और भाइयो' का सम्बोधन किया तो जनसमूह की करतल ध्वनि से वातावरण गूँज उठा था। ऐसी सद्‌भावना, विश्वभ्रातृत्वभाव व सामाजिक सौहार्द्र की मिसालें अन्यत्र कहाँ?

वर्तमान में उपादेयता इस त्योहार की

प्राचीन काल में ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:'' वाले भारत देश में बहनों को ब्राह्मी स्थिति प्राप्त थी जिससे इस बन्धन को बाँधने का श्रेय ब्राह्मणों और बहनों को दिया गया और यह बन्धन दृढ़ता का संकल्प-बंधन है जिसे संकल्प लेना या प्रतिज्ञा करना कहते हैं। किन्तु इसे विडम्बना ही कहेंगे कि अन्य त्योहारों की तरह रक्षाबन्धन भी कलिकाल के प्रभाव से पूर्णत: प्रभावित है। सम्बन्धों की निर्मलता कलुषित मनोवृत्ति एवं दूषित वातावरण में संदिग्ध होती जा रही है। वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में यदि पूरे विश्व का हर भाई समस्त नारी जाति को उस परमपिता की सन्तान के नाते बहन समझ राखी बँधवाता है तो समस्त नारी जाति की रक्षा करना उसका परम धर्म हो जाता है। विश्व भ्रातृत्व का भाव, किसी अन्य सम्बन्ध से नहीं बल्कि आत्मिक दृष्टि से भाई-भाई व स्थूल दृष्टि से भाई-बहन का बनता है। वर्तमान समस्त समस्याओं का हल इसी संकल्प-बन्दी में है।

सद्‌भावना का सशक्त सूत्र

आज विश्व पर आसन्न संकट को देखते हुए सम्पूर्ण मानवता के अस्तित्व को खतरा हो गया है। प्राकृतिक प्रकोप से ज्यादा तो मनुष्यों की अपनी करतूतें ही विनाश का कारण बन सकती हैं। मानवीय मूल्यों के पतन से उपजे सामाजिक विघटन की समस्या का निदान भी इसी रक्षाबन्धन के सूत्र में है। राखी के दो धागों में सर्वधर्म समभाव, साम्प्रदायिक सौहार्द, विश्व एकता, भाई-चारा, सम्बन्धों की मधुरता एवं सम्पूर्ण जगत के प्रति स्नेह, दया, करुणा, क्षमा एवं परस्पर सहयोग की भावना एवं सद्‌भावना समाहित है। आइये, विश्व-भ्रातृत्व की भावना के इस व्यापक दृष्टिकोण का प्रचार-प्रसार कर सही अर्थों में रक्षाबन्धन का परम पावन पर्व मनायें।